माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

मु.उ.पु. 24 पृष्ठ

कार्यालयीन उपयोग के लिए

परीक्षा के नाम की सील: Higher Secondary Examination

केन्द्र क्रमांक की सील: केन्द्र क्रं. 222033

निम्न रिक्तियों की सही प्रविष्टि परीक्षार्थी द्वारा की जाए।

1. विषय कोड 0 5 1 परीक्षा का विषय हिन्दी
2. परीक्षा का माध्यम हिन्दी परीक्षा की दिनांक 20-03-2009
3. परीक्षार्थी प्रश्न पत्र का पूर्ण कोड नम्बर (सेट A, B, C,या D) अनिवार्यतः भरें

कोड	सेट
U-2002	

[redacted]

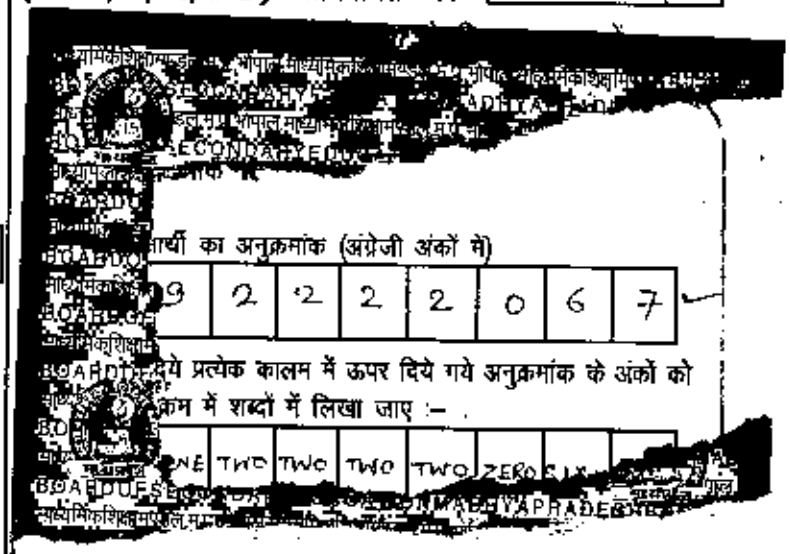

परीक्षार्थी का अनुक्रमांक (अंग्रेजी अंकों में)

[redacted]	2	2	2	2	0	6	7

नीचे दिये प्रत्येक कालम में ऊपर दिये गये अनुक्रमांक के अंकों को क्रम में शब्दों में लिखा जाए :-

[redacted]	TWO	TWO	TWO	TWO	ZERO	SIX	[redacted]

[redacted]

पर्यवेक्षक / केन्द्राध्यक्ष का प्रमाणीकरण

प्रमाणित किया जाता है कि परीक्षार्थी द्वारा निम्नानुसार पूरक उत्तरपुस्तिका ली गई है :-

क :- संख्या शब्दों में X अंकों में X

ख :- परीक्षार्थी की बैठक व्यवस्था कक्ष क्रमांक 2'अ' में है।

ग :- उत्तर पुस्तिका पर प्रश्न-पत्र का कोड नम्बर एवं सेट सही लिखा है।

हस्ताक्षर (पर्यवेक्षक)

नाम कृष्णगोपाल उपा. पद सहा. शि.

पता / संस्था

परीक्षार्थी द्वारा ली गई सभी पूरक उत्तर पुस्तिकायें, मुख्य उत्तर पुस्तिका के साथ संलग्न हैं।

हस्ताक्षर केन्द्राध्यक्ष

BSEMP

परीक्षार्थी, परीक्षक से अपेक्षा है कि वे पृष्ठ भाग पर दिये गये निर्देशों का यथेष्ट पालन सुनिश्चित करेंगे।

प्रमाणित किया जाता है कि उपरोक्तानुसार संलग्न पूरक उत्तर पुस्ति... चस्पा स्थिति में यथावत् रखते हुए ही उत्तरपुस्तिका का मूल्यांकन कि... पुस्तिका के अन्दर के अंक एवं कव्हर पृष्ठ पर दर्शाये अंक एक...

हस्ताक्षर (परीक्षक) हस्ताक्षर (उपमुख...

परीक्षक क्रमांक 95/0148 दिनांक..............

परीक्षार्थी के लिए निर्देश

1. परीक्षार्थी को अपना अनुक्रमांक/विषय/माध्यम/दिनांक एवं प्रश्न–पत्र का कोड (समूह) मुख पृष्ठ पर अंकित करना अनिवार्य है। अन्यत्र कहीं भी नहीं लिखा जाएगा।
2. अनुक्रमांक नीचे दिये गए उदाहरण अनुसार लिखा जाए :–

1	8	2	4	3	9	5	6	8
एक	आठ	दो	चार	तीन	नौ	पाँच	छः	आठ

3. उत्तर पुस्तिका के दोनों ओर पृष्ठों में लिखें। बीच में रिक्त स्थान न छोड़ें। भूल से छूटा/रिक्त स्थान तथा शेष खाली पृष्ठों को क्रास किया जाए।
4. परीक्षार्थी प्रश्न पत्र हल करते समय ही, कव्हर पृष्ठ पर दी गई तालिका में प्रश्न क्रमांक के सम्मुख वाले कालम में उत्तरपुस्तिका का वह पृष्ठ क्रमांक अनिवार्य रूप से अंकित करें जिस पर प्रश्न का उत्तर लिखा गया है। यदि पूरक उत्तरपुस्तिका का उपयोग किया गया हो, तो उस पर 25 से प्रारंभ करते हुए पृष्ठ क्रमांक परीक्षार्थी द्वारा स्वयं डाले जाएँ।

परीक्षक के लिए निर्देश

1. केवल उन्हीं उत्तरपुस्तिकाओं का मूल्यांकन करें जिन पर होलो क्राफ्ट स्टीकर चस्पा है।
2. उत्तरपुस्तिका का मूल्यांकन होलो क्राफ्ट स्टीकर को चस्पा स्थिति में यथावत् रखते हुए ही किया जाये।
3. बिना होलो क्राफ्ट स्टीकर वाली तथा फटे हुए होलो क्राफ्ट स्टीकर वाली सभी उत्तरपुस्तिकाऐं मूल्यांकन हेतु परीक्षा नियंत्रक, माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल को व्यक्तिशः रूप से भेजी जाये।

मूल्यांकन केन्द्र के लिए निर्देश

1. **O.M.R. SHEET** पर प्राप्तांक की प्रविष्टि करने हेतु केवल वही उत्तरपुस्तिकाएँ प्राप्त करें, जिनका मूल्यांकन होलो क्राफ्ट स्टीकर को चस्पा स्थिति में यथावत् रखते हुए ही किया गया है। यदि होलो क्राफ्ट स्टीकर फटा हुआ पाया जाता है तो ऐसी उत्तरपुस्तिकाऐं मूल्यांकन केन्द्र अधिकारी को पृथक से सौपी जाएँ। ऐसे प्रकरणों के प्राप्तांकों की प्रविष्टि **O.M.R. SHEET** में नहीं की जाए। मूल्यांकन केन्द्र अधिकारी ऐसी उत्तरपुस्तिकाऐं पुनः मूल्यांकन के लिये परीक्षा नियंत्रक, माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल को व्यक्तिशः रूप से सौपेंगे।
2. उत्तरपुस्तिका के मुख्य पृष्ठ में अंकों एवं शब्दों में अंकित प्राप्तांकों को मिलान कर **O.M.R. SHEET** में अंकों की सटीक प्रविष्टि करें।
3. **O.M.R. SHEET** पर प्रमाणीकरण कर हस्ताक्षर करें।

3

योग पूर्व पृष्ठ

B S E M P

प्र०.1

(i) कृष्ण

(ii) गुलाबराय

(iii) बात ही बड़ी

(iv) द्विवेदी युग के

(v) आठ

प्र०.2 (i) (ख) जब बरामदे और शयनागार का कहीं बैठ गया

(ii) (क) ईश्वर की ओर

(iii) (क) उपमा ~~अलंकार~~

(iv) (ख) गोपाल सिंह 'नेपाली'

(v) (ख) कर्मधारय समास

प्र०.3

(i) सत्य

(ii) सत्य

(iii) असत्य

(iv) सत्य

(v) असत्य

प्र०.4 (i) यशोधरा ने बसन्त कहा है – सिद्धार्थ को

(ii) कन्याकुमारी नाम पड़ा है – पार्वती के नाम पर

(iii) अमीरी की तुलना में गरीबी अधिक सुखक है -- ~~महात्मा~~ गाँधी

(iv) अम्बुज – कमल

(v) मिसाइलें – पृथ्वी और अग्नि

पृष्ठ

5. (i) सितंबर महीने तक वर्षा न होने के कारण त्राहि - त्राहि मची हुई थी।

(ii) सिरचन मानू से मिलने स्टेशन इसलिए गया था क्योंकि वह उसे चिक और शीतलपाटियाँ उपहार में देने गया था।

(iii) बिन पानी के मोती, मनुष्य और आटा महत्त्वहीन हो जाते हैं।

(iv) यशोधरा राजा सिद्धार्थ की पत्नी थीं।

(v) हंसिनी ने राज-काज राज्य की प्रजा को सौंपने का सुझाव दिया।

प्र. 6

उ. 6 यशोदा ने देवकी को यह संदेश भेजा कि देवकी, तुम हमेशा मेरे गोपाल कृष्ण पर अपने ममत्व की वर्षा करती रहना और इसे जो भी चीज़ चाहिए, वो देती रहना। सुबह में मेरे गोपाल को केवल मक्खन - रोटी ही पसंद आता है इसलिए नाश्ते में ये सब उसे देना। वह तेल के उबटन से डरता है और नहाने के नाम से भाग जाता है इसलिए पहले तो उसे उसी मनपसंद चीज़ें देना उसके बाद ही उसे नहलाना। वह संकोचशील है इसलिए उसकी मन की बातों को समझ लेना और किसी चीज़ की कमी महसूस मत होने देना।

B
S
E
M
P

पृष्ठ ... अंकों का योग

B S E M P

प्र० 7

उ० 7 'सबल के बल का सदुपयोग ही सफलता की कुंजी है।' यह पंक्ति 'बल - बहादुरी' नामक पाठ से ली गई है। इन पंक्तियों में यह बतलाया गया है कि बल अंधा होता है इसलिए उसका इस्तेमाल बुद्धि से साथ करना चाहिए। जिस प्रकार रावण, कृष्ण, राम एवं कंस सभी बलवान थे किन्तु दो की ही जयन्ती मनाई जाती है क्योंकि राम और कृष्ण ने अपने बल का सदुपयोग किया परन्तु कंस और रावण ने बल का दुरुपयोग जिस कारण उन्हें हार का मुँह देखना पड़ा। इसलिए बल का प्रयोग बौद्धिक जागृति के साथ समाज के कल्याण के लिए करना चाहिए, इस से ही हमें सफलता प्राप्त होती है।

प्र० 8

उ० 8 दुनिया में 'शब्द और कृति' दो अमोघ शक्तियाँ मानी गई हैं। दोनों ही पृथ्वी को हिलाने में सक्षम है अर्थात् यदि इनका सही इस्तेमाल किया जाए तो ये वरदान रूपी बनकर संसार का कल्याण करेंगी अन्यथा इनके दुरुपयोग से लोगों के बीच एक दूसरे के प्रति पाशविकता और घृणा जाग्रत हो जाएगी और धरती इस धधकती हुई ज्वाला से जल उठेगी।

कस्तूरबा की निष्ठा कृति की उपासना के साथ की हुई भक्ति में श्रद्धा है क्योंकि वे एक जीवंत आर्य नारी थीं और 'रामायण' तथा 'गीता' मे अपरिमाणीय विश्वास रखती थीं।

पृष्ठ के अंकों का योग

मध्यप्रदेश

प्र०-9

उ०-9 सुभद्रा कुमारी चौहान ने 'तीन बच्चे' में तीनों बच्चों की दशा अत्यंत दयनीय बताई है। उनकी दशा इतनी दयनीय है कि उनके पास दो वक्त की रोटी तक नहीं है। इनके माँ-बाप जेल में कैदी की जिंदगी बिता रहे हैं और यहाँ ये बच्चे भीषण कंटकमय पथ पर आगे की ओर अग्रसर परंतु ये बच्चे ईश्वर की दया-दृष्टि पर जीवित हैं। ये बच्चे गाकर भीख माँगते हैं और अपने पेट पर हाथ फेरकर अपने भूखे होने का संकेत देते हैं। इनके पास पहनने के नाम पर केवल कपड़ो के चीथड़े हैं। सचमुच इनकी यह 'विरह-अग्नि' देखी नहीं जाती।

प्र०-10

उ०-10 'पुस्तक' नामक निबन्ध में श्री देवेन्द्र दीपक (लेखक) ने नालन्दा की अविस्मरणीय विशेषताएँ बताई हैं। यह बताया गया है कि प्राचीन समय में भारत शिक्षा एवं ज्ञान के क्षेत्र में परम-आदर्श देश माना जाता था क्योंकि भारत में नालन्दा विश्वविद्यालय जैसे संस्थान थे। नालन्दा विश्वविद्यालय संसार के समस्त छात्रों के लिए एक आदर्श स्थान जहाँ पर दर्शनशास्त्र, अर्थशास्त्र, शस्त्रशिक्षा, युद्ध-कौशल, विज्ञान एवं तकनीकि तथा ज्योतिष जैसे कई विषयों की शिक्षा प्रदान की जाती थी। यहाँ 'नागार्जुन' जैसे

BSEMP

प्रकाण्ड ज्ञानी अपने ज्ञान के भण्डार से छात्रों को अनुग्रहित करते थे। इसमें तीन विश्वस्तरीय विशाल पुस्तकालय भी थे जिनमें से ज्ञान का समूचा भण्डार समाग्रहित था और छात्र इनसे नई-नई रोचक ज्ञान की बातें पढ़ एवं सीखा करते थे। सचमुच, नालन्दा विश्वविद्यालय अपने आप में एक अद्वितीय विश्वविद्यालय एवं शिक्षण संस्थान था।

प्र० 11

उ०-11 'उलटे बाँस बरेली' को कवि सुदर्शन ने इस संदर्भ में कहा है जहाँ पूरा विश्व हमारी संस्कृति को आदरपूर्वक अपनाकर अपने विकास का चहुमुखी द्वार खोल रहा है वहाँ हम अपनी संस्कृति को विकास का मार्ग प्रशस्त करने वाली देवी न मानकर हम पाश्चात्य संस्कृति को अपनाने के लिए ललचा रहे हैं और इसी खुशी में हम दुंदुभी बजा रहे हैं। पाश्चात्य संस्कृति हमारी संस्कृति से हमारे आदर्शों और जीवन-मूल्यों को चुराकर और उस पर अपने नाम का छप्पा लगाकर हमें हमारी संस्कृति को प्याले से हमें ही रस-पान कराया जा रहा है। हमारे दिए हुए योग, वास्तुशास्त्र एवं दर्शनशास्त्र को योगा, रेकी और फेंगशुई का नाम देकर विश्व में प्रचारित कर रही है—यह पाश्चात्य संस्कृति। इसलिए हमें अपनी संस्कृति की महानता को मानना चाहिए और हमें भारतीय ही बने रहना चाहिए।

प्र०.12

उ०. 12 द्विवेदी युग के निबंधकार इस प्रकार हैं :-

(1) महावीर प्रसाद द्विवेदी — साहित्य संदर्भ, साहित्य सीकर

(2) आचार्य रामचंद्र शुक्ल — ठलुआ क्लब, मेरी असफलताएँ

BSEMP

प्र०.13

(अ) – (क) फूट-फूटकर रोना — अत्यधिक दुख प्रकट करना और पछताना होना।
वाक्य प्रयोग :- अपने माता-पिता की मौत की खबर सुनकर रमेश फूट-फूटकर रोने लगा।

(ग) हँसी-खेल न होना — कार्य आसान न होना।
वाक्य प्रयोग — बोर्ड परीक्षा में जिले में प्रथम आना कोई हँसी खेल नहीं है।

(ब) (क) पुस्तक चुराई जाती है।
(ग) मीरा सुन्दर लड़की है।

प्र०-14 (अ)

(क) उपेक्षा – अपेक्षा :-

उपेक्षा – अवहेलना या बुराई

वाक्य प्रयोग – उसने सरे आम मेरी उपेक्षा करके ठीक व्यवहार नहीं किया है।

अपेक्षा – आशा करना

वाक्य प्रयोग – मैं आपसे यही अपेक्षा करूँगा कि आप अपना वादा नहीं तोड़ेंगे।

(ख) सुत – सूत :-

सुत – पुत्र

वाक्य प्रयोग :- हनुमान जी को 'पवनसुत' के नाम से भी जाना जाता है।

सूत – धागा

वाक्य प्रयोग :- हमारी संस्कृति ने हमें अनेकताएँ होने पर भी 'एकता' के सूत में पिरोए रखा है।

14.(ब)

(क) आप चुप रहिये।

(ग) तुम परिश्रम करके परीक्षा में सफल हो जाओ।

BSEMP

6
पृष्ठ के अंकों का योग

प्र०15 (ii) प्रकृति पर विजय प्राप्त करके ही मनुष्य दम लेता है।

भाव पल्लवन :- प्राचीनतम काल से मानव का विकास होता चला आ रहा है और इस विकास के पीछे उसकी दृढ़ इच्छाशक्ति कार्य कर रही है। उसे अपने हृदय तथा मस्तिष्क पर पूरा भरोसा है कि वह जिस क्षेत्र में जाएगा, सफलता उसके कदम चूमेगी। प्रकृति हमेशा से अपने आप को शक्तिशाली सिद्ध करती आ रही है किंतु मनुष्य की आंतरिक शक्ति उसे प्रकृति के समान शक्तिशाली बना रही है। वह जब तक प्रकृति पर विजय न पा ले अर्थात् अपने आप को 'सर्वशक्तिमान' सिद्ध न कर ले, तब तक वह घोर ~~परिश्रम~~ परिश्रम का तप करता है और अपनी सफलता के लक्ष्य को प्राप्त कर लेता है।

BSEMP

प्र०16 विश्व एक .... इंजन है।

उ०16 संदर्भ :- प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक के 'मेरे सपनों का भारत' पाठ से उद्धृत है। इसके लेखक हैं डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम।

प्रसंग :- प्रस्तुत गद्यांश में लेखक कहना चाहता है कि ~~समाज~~ विश्व एक बौद्धिक समाज में बदल रहा है और भारत को इस अवसर का लाभ उठाकर विकसित देश ~~बनना~~ बनना चाहिए।

व्याख्या :- डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम यह कहना चाहते हैं कि विश्व एक बौद्धिक समाज में परिवर्तित हो रहा है अर्थात् विश्व में विज्ञान, तकनीकि एवं परस्पर ज्ञान का महत्व दिनोंदिन बढ़ता चला जा रहा है। यहाँ पर अनन्त ज्ञानशक्ति तथा धन का समन्वय हो रहा है। यहाँ पर विकास करने के बहुत से अवसर विकासशील देशों को मिल रहे हैं और विकासशील होने के कारण भारत को भी अमूल्य अवसर का लाभ उठाना चाहिए तथा विकसित देश बनने की ओर अग्रसर होना चाहिए। परंतु यहाँ विश्व स्तर पर प्रतिस्पर्धात्मकता का मामला है और बहुत से देश इस अवसर का लाभ उठाना चाहिए। यदि हम चाहते हैं कि हमें विकसित राष्ट्र बनना है तो हमें खुद को पहचानना होगा और अपनी छिपी हुई मनोशक्ति को जागृत करना होगा तभी हम विकसित हो पायेंगे।

B S E M P

4

प्र०.न जैसा - - - - - - - - - - - - - - - - - जाता है।

उ०.न संदर्भ :- प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक के 'हिमालय और हम' नामक पाठ से उद्धृत हैं जिसके रचयिता गोपाल सिंह 'नेपाली' हैं।

प्रसंग :- प्रस्तुत पंक्तियों में कवि ने भारतवासियों और हिमालय के मध्य जो संबंध है, उसका वर्णन किया गया है।

52

पृष्ठ के अंकों का योग

B S E M P

व्याख्या :- कवि कह रहा है कि हिमालय
की यह विशेषता है कि वह अटल, अडिग,
अविचल है अर्थात कोई भी वस्तु या परेशानी
उसको उसके पथ से डिगा नहीं सकती। ठीक
उसी प्रकार जब भारतीय किसी कार्य को करने
की ठानते हैं तो वह कार्य समाप्त करने के
बाद ही शांत बैठते हैं। जैसा कहा गया है -
'प्राण जाई पर वचन न जाई', पूरी तरह से
भारतवासियों पर चरितार्थ होती है। कोई भी व्यक्ति
या मुसीबत भारतवासियों को ललकार नहीं सकती
और वे हिंसा के द्वारा लोगों के अतिशक्तिशाली
मन को हरा नहीं सकते। जो व्यक्ति इस
हिमालय से निकलने वाली गंगा का जल पीते
हैं उनमें हिमालय के सारे गुण आ जाते हैं और
दुख होने पर मुस्कुराते रहते हैं।

10- ब.

(क) उपर्युक्त पंक्तियों में कवि ने वर्षा ऋतु के
आगमन पर चारों ओर छाई हुई खुशी को
व्यक्त किया है। आकाश में बादल छाए हुए
हैं और प्रकृति के सारे जीव-जन्तु, पेड़-पौधे
आनंद की वर्षा में भीग रहे हैं।

पृष्ठ के अंकों का योग

(ख) उक्त पंक्तियों में कवि ने वर्षा ऋतु का वर्णन किया है।

(ग) 'आया सावन झूम के' इस पद्यांश का उपर्युक्त शीर्षक है।

प्र.19

(क) 'राष्ट्रीय चरित्र — विकास का आधार' इसका उचित शीर्षक है।

(ख) क्रियान्वयन —
राष्ट्रीय चरित्र — राष्ट्र के प्रति देशभक्ति की भावना

(ग) उपर्युक्त गद्यांश में यह बतलाया गया है कि राष्ट्रीय चरित्र ही विकास का आधार है। किसी भी राष्ट्र के विकास की आधारशिला देशवासियों पर निर्भर करता है। चरित्र से नैतिक मूल्यों का मान बढ़ता है और प्रजातन्त्र सुख - समृद्धि की ओर अग्रसर होता है। इसी कारण से भारत के गौरव में वृद्धि होती है और वह गर्व से अपना मस्तक विश्व के सामने ऊँचा किये रहता है।

प्र.20 पिताजी को पत्र

उ.20

~~बजरंग नगर, ड-40~~
~~ग्वालियर (म.प्र.)~~

पत्र अगले पृष्ठ पर लिखा हुआ है।

BSEMP

6

पृष्ठ के अंकों का योग

BSEMP

बजरंग नगर, D-40
ग्वालियर (म.प्र.)

पूज्यनीय पिताजी,

सादर चरणस्पर्श।

यह पत्र, मैं आपको लिख रहा हूँ क्योंकि मैं आपको अपने अच्छे स्वास्थ्य एवं बोर्ड परीक्षा की तैयारी के बारे में बताना चाहता हूँ। जब मैं यहाँ आया था, तभी से मेहनत कर रहा हूँ और मैंने अपने आप में एक बदलाव पाया है कि मैं पूरी तरह से आत्मविश्वास से भरा हूँ। इस बार बोर्ड परीक्षा के लिए मैंने गणित सुधारने के लिए एक अध्यापक से सहायता भी ली थी और बाकी सारे विषय मैंने अच्छी तरह से तैयार कर लिए हैं।

मैंने पढ़ाई के साथ-साथ अपने भोजन पर ध्यान दिया है ताकि मुझमें हमेशा स्फूर्ति बनी रहे और एकाग्रचित्त मन से अपने कार्य को समाप्त कर सकूँ। मुझे आशा है कि इस बार में ही प्रथम आऊँगा और आपका नाम रोशन करूँगा।

आपको सादर प्रणाम, माता जी को चरणस्पर्श और भाई-बहनों को मेरा प्रेम।

दिनांक
20-03-09

आपका प्रिय पुत्र
क. ख. ग.

पृष्ठ के अंकों का योग

प्र० 21

उ० 21 :- ## विज्ञान और कम्प्यूटर

प्रस्तावना :- 'विज्ञान' शब्द अपने आप में चमत्कारी शब्द है जिसके बिना हम मानव के विकास की कल्पना भी नहीं कर सकते हैं। आज हम देख रहे हैं कि विश्व बौद्धिक समाज में बदल रहा है और चहुँमुखी विकास करने के लिए स्वर्णिम अवसर भिन्न-भिन्न देशों को प्राप्त हो रहे हैं। आज हमारे 'सर्वशक्तिमान' बनने के पथ पर विज्ञान ही वह "गौरवशाली चाबी" है जिसके द्वारा हमारे विकास तथा प्रकृति के रहस्यों पर जो "ताला" पड़ा हुआ है, उसे खोला जा सकता है। यह विज्ञान ही मानव के गौरवशाली जीवन एवं उसके समृद्ध भविष्य की आधारशिला है। चारों ओर विज्ञान द्वारा किए गए भिन्न-भिन्न चमत्कारों को देखकर हम 'दाँतों तले उँगली' दबा लेते हैं।

पश्चिमी सभ्यता एवं हमारी गीता के अनुसार शक्तिशाली एवं योग्य व्यक्ति ही इस जीवनसंघर्ष में सफलता को प्राप्त कर सकता है और उसे ही इस धधकती हुई एवं जलती हुई पृथ्वी पर जीने का हक है। यह असंभव सा दिखने वाला कार्य विज्ञान के द्वारा संभव बन पड़ा है। सच में यदि यह विज्ञान न होता तो आज भी 'आदिमानव की तरह जीवन व्यतीत कर रहे होते, न हमारी कोई संस्कृति होती और न ही हमारी कोई अलग पहचान'।

BSEMP
पृष्ठ के अंकों का योग

* विज्ञान का चमत्कार — कम्प्यूटर

जैसा की हम जानते हैं कि आज का युग आधुनिकिकरण का है और हर एक वस्तु धीरे-धीरे अपने ~~रंग~~ रंग-रूप को बदलकर आधुनिक दुनिया से साथ कदम से कदम मिला कर चल रही है। इसी कड़ी में एक और वस्तु आकर जुड़ी है जिसका नाम है - कम्प्यूटर।

~~कम्प~~ कम्प्यूटर को हम आधुनिक टेलीविज़न भी कह सकते हैं जो हमारे मनोरंजन करने के काम तो आते ही हैं साथ ही यह बदलते युग के बौद्धिकिकरण को भी प्रतिपादित करते हैं। ये हमें ज्ञान के भण्डार उपलब्ध कराते हैं जिसमें प्राचीन काल की विषय-वस्तु से लेकर आज के आधुनिकतम युग की जानकारीयाँ देता है। और सबसे बड़ी बात तो यह है कि इसने विश्व को एक छोटे से संसार में परिवर्तित कर दिया। अब कोई भी व्यक्ति किसी से दूर नहीं है। वह स्वयं सात समुंदर पार से भी किसी और व्यक्ति से बात कर सकता है और हाव-भाव बतला सकता है।

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

* कम्प्यूटर – रिसर्च (अनुसंधान) तथा तकनीकि में महत्वपूर्ण योगदान

कम्प्यूटर स्वयं तो विज्ञान का चमत्कार है परंतु यह दूसरे चमत्कारों को संभव बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। हम जानते हैं कि आज मनुष्य चाँद पर और दूसरे ग्रहों पर जाने में सक्षम हो गया है परंतु यह सब संभव किसकी वजह से संभव हो पाया है – कंप्यूटर।

विज्ञान की देन की वजह से विज्ञान ने ऐसी-ऐसी मशीनें तैयार कर ली हैं जो वैज्ञान के बड़े-बड़े में कामों में हाँथ बटाती हैं। ये सभी मशीनें किसी न किसी तरह से आधुनिक कम्प्यूटर से जुड़ी हुई हैं। यह कम्प्यूटर ही तो इसकी मुख्य आधारशिला है।

* कम्प्यूटर – प्रशासनिक कार्यों में योगदान

कम्प्यूटर प्रशासनिक कार्यों में योगदान देता है। यह हर एक कार्य को उसकी कई गुना रफ्तार से कर सकता है। जैसे बैंकों में इसका इस्तेमाल किया जाता है। विश्व के सारे बैंकों का लेन-देन और खाता से जुड़ी जानकारियाँ इसी के माध्यम से स्टोर की जाती हैं।

B S E M P

पृष्ठ के अंकों का योग

कम्प्यूटर - उपसंहार

अन्त में कंप्यूटर हमारे लिए वरदान साबित हुआ है और इसने मानव को विकास की चरम-सीमा तक पहुँचने में मदद की है।

BSEMP

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 19 के अंक = कुल अंक

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 20 के अंक = कुल अंक

मध्यप्रदेश

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 21 के अंक = कुल अंक

मध्यप्रदेश

B S E M P

पृष्ठ के अंकों का योग

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 22 के अंक = कुल अंक

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 23 के अंक = कुल अंक

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 24 के अंक = कुल अंक

B
S
E
M
P

पृष्ठ के अंकों का योग